क्यांक 1834-क (II)-81735466.—पूर्वी पंजाब युद्ध पुरस्कार अधिनियम, 1948 (जैसा कि उसे हरियाणा राज्य में अपनाया गया है और उसमें आण तक संशोधन किया गया है). की धारा 2(ए)(1) तथा 3(1) के अनुसार सेंपि गए अधिकारों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल श्री गोरधन सिंह, पुत्र श्री नेकी राम, गांव हरसाना कलां, तहसील व बिला सोनीपत, को खरीक, 1976 से खरीक, 1979 तक 150 रुपये वाविक तथा रबी, 1980 से 300 रुपये वाविक कीमत बाली युद्ध जाशीर सनद में दी गई शर्तों के अनुसार सहवं प्रदान करते हैं।

कमांक 1550-ज (II)-81/35470. पूर्वी पंजाब युद्ध पुरस्कार श्रधिनियम, 1948 (जैसा कि उसे हरियाणा राज्य में अपनाया गया है और उसमें आज तक संशोधन किया गया है) की धारा 2(ए) (1ए) तथा 3(1ए) के अनुसार सोंपे गए अधिकारों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल श्री मातु राम, पुत्र श्री गृहल्ला राम, गांव कटेसरा, तहसील व जिला रोहतक, को रवी, 1969 से रवी, 1970 तक 100 रुपये वार्षिक तथा खरीफ, 1970 से खरीफ, 1979 तक 150 रुपये तथा रवी, 1980 से 300 रुपये वार्षिक कीमत वाली युद्ध जागीर सनद में दी गई शर्तों के अनुसार सहर्ष प्रदान करते हैं।

दिनांक 6 अक्तूबर, 1981

क्यांक 1972-ज(I)-\$1/36146.--पूर्वी पंजाब युद्ध पुरस्कार प्रधिनियम, 1948 (जैसा कि उसे हरियाणा राज्य में अपनाया गया है और उननें ध्राज तक्त संगोधन किया गया है) की घारा 2(ए)(1१) तथा 3(1ए) के ध्रनुसार सौंपे गये अधिकारों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल श्री बुद्ध राम विश्वनोई, पुन्न श्री चुनी लाल विश्वनोई, गांव जन्डवाला विश्वनोईयां, तहसील मंडी डब्बाली, जिला सिरसा, को रवी, 1973 से खरीफ, 1979 तक 150 स्पये वार्षिक तथा रवी, 1980 से 300 स्पये वार्षिक कीमत वाली युद्ध जागीर सनद में श्री गई शहीं के ध्रनुसार सहसे प्रदान करते हैं।

क्रमांक 1841-ज(I)-81/36150.—पूर्वी पंजाब युद्ध पुरस्कार अधिनियम, 1948 (जैसा कि उसे हरियाणा राज्य में अपनाया गया है भीर उसमें भ्राज तक संशोधन किया गया है) की धारा 2(ए) (1ए) तथा 3(1ए) के अनुसार सोंपे गए प्रधिकारों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल श्री बिहारी लाल, पुन्न श्री गोपाल, क्रांम सिहोर, तहसील व जिला महेन्द्रगढ़, को रखी, 1969 से रबी, 1970 का 100 रुपये वार्षिक तथा रबी, 1980 से 300 रुपये वार्षिक कीमत वाली युद्ध जागीर सनद में दी गयी शर्तों के अनुसार सहर्ष प्रदान करते हैं।

दिनांक 7 अन्तूबर, 1981

क्यांक् 1906-ज(I)-81/36391.—पूर्वी पंजाब युद्ध पुरस्कार द्विवित्यम, 1948 (जैसा कि उसे हरियाणा राज्य में द्विपताया गया है और उस में प्राज तक संगोधन किया गया है) की धारा 2(ए)(1ए) तथा 3(1ए) के श्रनुसार सींचे गए प्रधिकारों का प्रयोग करने हुए हरियाणा के राज्यपाल श्रीमती गिन्दोडी देवी, विववा श्री मोहन लाल, प्राम राजगढ़, तहसील बाबल, जिला महेन्द्रगढ़, को रबी, 1973 से खरीक. 1979 तक 150 रुपये तथा रबी, 1980 से 300 रुपये वार्षिक कीमत वाली युद्ध जागीर सनद में दी नई शती के श्रनुसार सहर्ष प्रदान करते हैं।

गुढि-पत्र

दिनांक 16 सितम्बर, 1981

क्रमांक 1730-क-I-80/33643.—हरियाणा सरकार, राजस्व विभाग युद्ध जागीर प्रधिस्चना क्रमांक 965-ज-I-80/23187, दिनांक 8 जुलाई, 1980 जो हरियाणा सरकार के राजपक्त में दिनांक 19 अगस्त, 1980 को प्रकाशित हुई है, की तीसरी लाईन में ''श्री तोसा सिंह'' की वजाये ''श्री तोना सिंह'' पढ़ा जाये ।

दिनांक 18 सितम्बर, 1981

ककांक 649-ज-I-80/33976.—हरियाणा सरकार, राजस्व विभाग युद्ध जागीर ग्रधिसूचना कर्माक 1 15-ज-I-80/6386, दिनांक 19 फरवरी, 1980 जो हरियाणा सरकार के राजपत्र में दिनांक 4 मार्च, 1980 में प्रकाशित हुई है, के कमाक 3 में गात का नात ''दुलिवण्ना'' की वजाये दुलियाना'' पढ़ा जाये ।

कमांक 1753-ज-II-81/34170.—-हरियाण सरकार, राजस्व विभाग युद्ध जागीर प्रविक्षचना क्रमांक 678-ज-81/24065, दिनांक 14 जुलाई, 1981 में गांव का नाम ''रेंद्'' की बजाये ''रिखाऊ' पढ़ा जाये ।

क्रमांक 94-ज-II-80/34174.—हरियाणा सरकार, राजस्व विभाग युद्ध जागीर अधिसूचना क्रमांक 1671-ज-II - 79/44340, दिनांक 31 श्रक्तूबर, 1979 जी कि हरियाणा सरकार के राज-पत्न में दिनांक 20 नवम्बर, 1979 में प्रकाणित हुई है की तीसरी लाईन में गांव का नाम "छरसीली" की वजाये "करसीला" पढ़ा जाये।

देस राज सतीजा, विमेष कार्य प्रसिकारी, हरियाणा सरकार,

राबस्य विभाग।

1648 CS (H)—Govt. Press, Chd.